बड़ा सवाल- बेचें, खरीदें या मौजूदा निवेश बनाए रखें?

युद्ध के साये में बाजार की चाल कैसी?

अखिलेश प्रताप सिंह
Akhilesh.Singh1
@timesofindia.com

*ईरान पर अमेरिका और इजरायल के हमलों से छिड़ी जंग ने भारतीय शेयर बाजार की नींव हिला दी है। पिछले एक हफ्ते में ही सेंसेक्स और निफ्टी में लगभग 3% की भारी गिरावट दर्ज की गई, जिससे निवेशकों के करीब 14 लाख करोड़ रुपये स्वाहा हो गए। इस संकट की सबसे बड़ी वजह कच्चे तेल (**Crude Oil**) की कीमतों में आया उछाल है, भारत अपनी जरूरत का 88% कच्चा तेल आयात करता है, जिसका आधा हिस्सा इसी क्षेत्र से आता है। $93 प्रति बैरल के करीब पहुंच चुका क्रूड अब $100 के स्तर को पार करने का जोखिम पैदा कर रहा है।*

ईरान पर अमेरिका और इजरायल के हमले से शुरू हुए युद्ध ने शेयर मार्केट को हिला दिया है। पिछले हफ्ते भर में ही सेंसेक्स और निफ्टी करीब 3% गिर गए। यह पिछले सालभर में सबसे बड़ी साप्ताहिक गिरावट रही। निवेशकों को करीब 14 लाख करोड़ रुपये की चपत लग चुकी है। बड़ा सवाल यह है कि ऐसे में बिकवाली करें, निवेश बनाए रखें या इस गिरावट में कुछ खरीदारी करें?

पश्चिम एशिया में छिड़ी जंग के चलते होरमुज की खाड़ी से जहाजों की आवाजाही लगभग ठप हो गई है। इसके चलते क्रूड ऑयल का भाव उछल गया है क्योंकि दुनिया में क्रूड ऑयल की कुल ढुलाई का 20% हिस्सा और LNG का भी करीब इतना ही हिस्सा यहीं से गुजरता रहा है। भारत के कुल क्रूड इंपोर्ट का करीब 50% हिस्सा भी वहीं से आता है। यह मामला इसलिए भी अहम है क्योंकि भारत अपनी जरूरत का 88% क्रूड ऑयल आयात करता है और इस साल की शुरुआत में 66-67 डॉलर पर रहा क्रूड ऑयल अब 93 डॉलर प्रति बैरल के करीब पहुंच गया है। इसके जल्द 100 डॉलर पार कर जाने का रिस्क बन गया है।

इंफोमेरिक्स रेटिंग्स के मुख्य अर्थशास्त्री मनोरंजन शर्मा ने कहा, 'क्रूड ऑयल का भाव बढ़ने से महंगाई का दबाव बढ़ेगा। आयात की लागत ज्यादा होने से करंट अकाउंट डेफिसिट बढ़ सकता है और तमाम चीजों पर सब्सिडी को देखते हुए राजकोषीय घाटे पर असर दिख सकता है।' वित्त मंत्रालय ने भी लेटेस्ट मंथली इकनॉमिक रिव्यू में महंगाई बढ़ सकने की चिंता जताई है। उसने यह भी कहा है कि इस युद्ध का भारत पर असर लंबे समय तक बना रह सकता है।

कहां जाएगा शेयर बाजार?

जियोजीत इनवेस्टमेंट्स लिमिटेड के चीफ इनवेस्टमेंट स्ट्रैटेजिस्ट डॉ वी के विजयकुमार ने कहा, 'मिड टर्म में मार्केट की दिशा युद्ध से जुड़े घटनाक्रम से तय होगी। अगर होरमुज स्ट्रेट से आवागमन लंबे समय तक बाधित रहता है तो तेल और उछलेगा। इसका सीधा असर मार्केट पर पड़ेगा।

ब्रिकवर्क रेटिंग्स के रिसर्च हेड राजीव शरण ने कहा, 'ब्रेंट क्रूड के भाव चढ़ने से महंगाई और करंट अकाउंट डेफिसिट बढ़ने का खतरा है। इससे RBI की ओर से रेट घटाने में देर हो सकती है। ऑटोमोबाइल्स, फाइनैंशल्स और एनर्जी सेंसिटिव सेक्टरों पर दबाव बढ़ेगा।

कोटक सिक्योरिटीज के VP अमोल अठावले ने कहा, 'मार्केट अभी शॉर्ट टर्म और मीडियम टर्म ऐवरेज से नीचे है। डेली चार्ट्स पर यह लोअर टॉप्स भी बना रहा है। वीकली चार्ट्स पर बेयरिश कैंडल बनने से मौजूदा स्तरों से और कमजोरी आने का संकेत भी मिल रहा है। ऐसे में लेवल-बेस्ड ट्रेडिंग ही ठीक रहेगी।

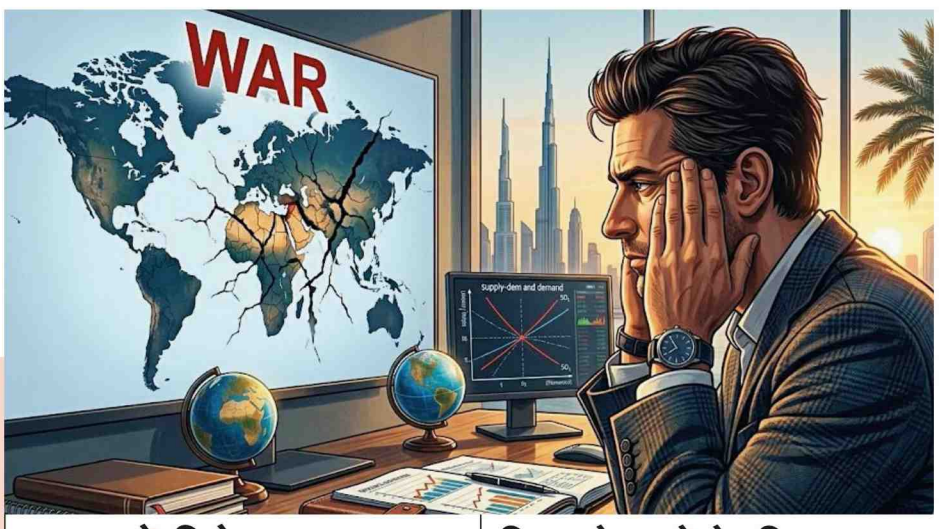

क्या करें निवेशक?

जियोजीत इनवेस्टमेंट्स के रिसर्च हेड विनोद नायर ने कहा, 'निवेशक सेफ हेवेन असेट्स की ओर मुड़ रहे हैं। सतर्कता बढ़ गई है। हमारी सलाह है कि ऐसे दौर में घबराहट में बिकवाली नहीं करनी चाहिए। लंबी अवधि के लक्ष्यों के हिसाब से अनुशासन बनाए रखें।

किन सेक्टरों के लिए प्लस

मौजूदा माहौल ऐसे सेक्टरों के लिए अनुकूल हो गया है, जिन्हें क्रूड ऑयल के भाव चढ़ने से फायदा हो सकता है और युद्ध के हालात से जिनका बिजनेस मजबूत हो सकता है। इनमें क्रूड ऑयल का उत्पादन करने वाली कंपनियां है, तो सोलर और बैटरी सहित रिन्यूएबल एनर्जी कंपनियां भी है।

किन सेक्टरों के लिए माइनस

जिन सेक्टरों में क्रूड ऑयल और इसके प्रोडक्ट्स का उपयोग कच्चे माल के रूप में होता है, उनके लिए चिंता बढ़ गई है। ऑयल मार्केटिंग कंपनियों के लिए भी स्थिति गड़बड़ है क्योंकि क्रूड चढ़ने से उनके प्रॉफिट मार्जिन पर आंच आएगी। वही, LNG की सप्लाई में दिक्कत सिटी गैस डिस्ट्रिब्यूशन कंपनियों को तकलीफ देगी। LNG के बढ़ते भाव उर्वरक कंपनियों की दिक्कत भी बढ़ाएंगे। एविएशन सेक्टर के लिए भी चुनौती है क्योंकि विमानन कंपनियों की कामकाजी लागत में करीब 40% हिस्सा फ्यूल का होता है।

क्या कह रहे विशेषज्ञ?

सक्षम वेल्थ के समीर रस्तोगी ने कहा, 'मौजूदा हालात ONGC, OIL और वेदांता जैसे शेयरों के फेवर में हैं। सोलर और बैटरी सेगमेंट का भी फायदा मिल सकता है। हालांकि पेंट, FMCG, स्पेशियलिटी केमिकल्स, सिंथेटिक टेक्सटाइल्स, सेरामिक्स और फर्टिलाइजर्स जैसे सेक्टरों पर बुरा असर पड़ेगा क्योंकि इनमें क्रूड ऑयल और इसके प्रोडक्ट्स का ज्यादा उपयोग होता है।' जियोजीत इनवेस्टमेंट्स के डॉ वी के विजयकुमार ने कहा, 'यह फाइनैंशल्स, ऑटोमोबाइल्स, कैपिटल गुड्स और टेलीकॉम सेक्टरों के ब्लू चिप स्टॉक्स खरीदने का सही समय है।

टेक्नॉलजी पर जोर, हौसले से भरपूर, ये हैं आज की निवेशिकाएं

*कभी पुरुषों का गढ़ माने जाने वाले वित्तीय बाजार (**Financial Market**) की तस्वीर अब तेजी से बदल रही है। जहां तीन दशक पहले निवेश की शुरुआत करना एक चुनौती थी, वहीं आज देश के कुल 12.5 करोड़ निवेशकों में से हर चौथा निवेशक एक महिला है। नैशनल स्टॉक एक्सचेंज (**NSE**) के ताज़ा आंकड़े गवाह हैं कि महिलाओं की हिस्सेदारी अब 25% के ऐतिहासिक स्तर पर पहुंच गई है।*

फॉर्च्यून इंडिया की साल 2025 की लिस्ट में सबसे प्रभावशाली 50 महिलाओं में शामिल रहीं देविना मेहरा एक दिलचस्प बात बताती हैं। आज वह फाइनैंशल वर्ल्ड का जाना-पहचाना चेहरा हैं और वह इस बात पर बहुत जोर देती हैं कि बचत और निवेश की शुरुआत जल्द से जल्द कर देनी चाहिए। हालांकि फर्स्ट ग्लोबल की फाउंडर और CMD मेहरा बताती हैं कि उन्हें तब इस बात का खयाल नहीं था, जब 1986 में IIM अहमदाबाद से पढ़ाई के बाद 21 साल की उम्र में उन्होंने काम शुरू किया था। करीब 3-4 साल बाद जाकर उन्होंने निवेश की शुरुआत की। लेकिन तब से लेकर आज तक दुनिया काफी बदल चुकी है।

NSE के आंकड़े बता रहे हैं कि साल 2023 में टोटल इनवेस्टर्स में निवेशिकाओं का हिस्सा 22.8% था। साल 2024 में 24.1% पर पहुंचा और अब कुल 12.5 करोड़ इनवेस्टर्स में निवेशिकाओं का हिस्सा 25% हो चुका है। Tradejini के COO त्रिवेश डी कहते हैं, '10-12 साल पहले देश में टोटल मार्केट पार्टिसिपेंट्स में महिलाओं की हिस्सेदारी सिंगल डिजिट में होती थी, आज यह 25-30% हो चुकी है। यह ग्रोथ मुख्य रूप से डिजिटल प्लैटफॉर्म्स के जरिए आई है। 22-35 साल तक की युवा महिलाएं मोबाइल ऐप्स के जरिए डीमैट अकाउंट खोल रही हैं, अपने फोन से SIP और रियल टाइम एनालिटिक्स के जरिए पोर्टफोलियो ट्रैक कर रही हैं।'

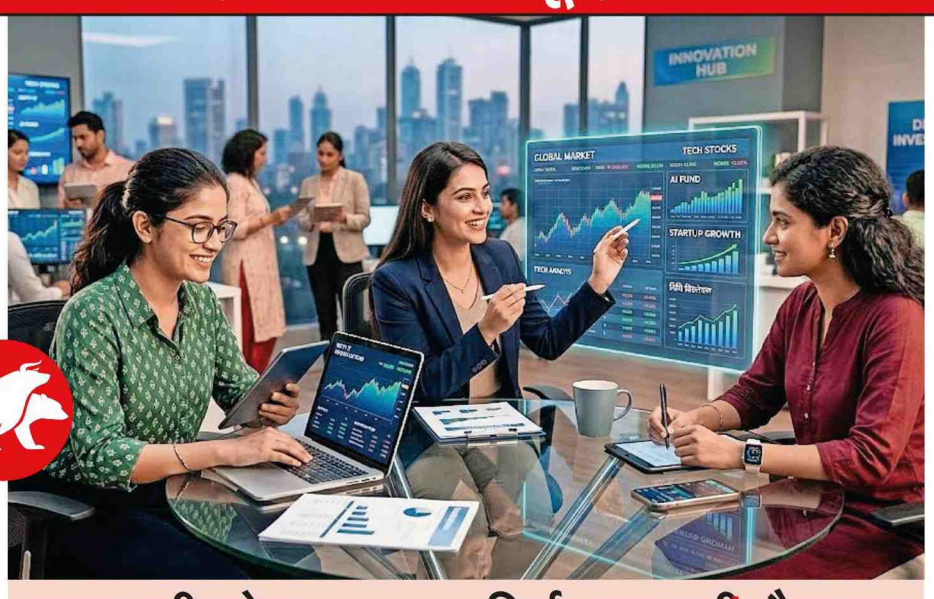

बदल रही सोच

Share.Market (PhonePe Wealth)के इनवेस्टमेंट प्रोडक्ट्स हेड नीलेश नाइक कहते हैं, 'फोनपे वेल्थ में हम म्यूचुअल फंड्स में महिलाओं की भागीदारी में अहम बदलाव देख रहे हैं। वे ज्यादा आत्मविश्वास, अनुशासन और लंबी अवधि के नजरिए के साथ निवेश कर रही हैं। डिजिटल प्लैटफॉर्म्स से सहूलियत बढ़ने और निवेश की दुनिया में कदम रखने की बाधाएं घटने से महिलाएं आगे आ रही हैं।

सिर्फ राय नहीं, फैसला

एनारॉक ग्रुप के वीसी संतोष कुमार कहते हैं, 'आज महिलाएं आर्थिक रूप से ज्यादा सक्षम हैं और घर खरीदने में उनकी भूमिका केवल राय देने की नहीं है। एनारॉक के लेटेस्ट कंस्यूमर सेंटिमेंट सर्वे के मुताबिक, 90 लाख से ज्यादा के घर खरीदने वाली महिलाओ का हिस्सा साल 2019 में केवल 25% था और अब यह 61% हो गया। अभी 37% संभावित विमिन होमबायर 90 लाख से 1.5 करोड़ रुपये के घर लेना चाहती हैं।

टेक्नॉलजी का साथ

Tradejini के COO त्रिवेश डी ने कहा, 'ट्रेडजिनी पर हम निवेशिकाओं को अपने लक्ष्य के हिसाब से निवेश करते हुए और ETF चुनते देख रहे है। वे डेरिवेटिव्स लर्निंग मॉड्यूल्स में भी दिलचस्पी दिखा रही हैं। पैसिव पार्टिसिपेशन नही रह गया है। अब महिलाएं पूरी जानकारी के साथ और आंकड़ों के आधार पर निवेश कर रही है।' त्रिवेश डी कहते हैं, '70% से ज्यादा निवेशिकाएं आज स्वतंत्र रूप से वित्तीय फैसले कर रही हैं। हर चौथा नया डीमैट अकाउंट महिलाएं खोल रही हैं। कोविड के बाद यह पैटर्न बढ़ा है।

क्रिप्टो पर दांव

Mudrex के CEO एडुल पटेल कहते हैं, 'पिछले दो साल में हमारे यहां निवेशिकाओं की संख्या 6 गुनी हो गई है। निवेशिकाओं में 25-34 साल तक की महिलाओं का हिस्सा 48% तक है। इनमें ज्यादातर यंग प्रफेशनल्स और फर्स्ट टाइम वेल्थ क्रिएटर्स हैं, जो परंपरागत निवेश के पूरक के रूप में डिजिटल असेट्स पर दांव लगा रही हैं। इनमें से कई ऐसी हैं जो पहली बार स्वतंत्र रूप से निवेश कर रही हैं। निवेशिकाओं की तेजी से बढ़ती संख्या भारत के डिजिटल फाइनैंस लैंडस्केप में एक बड़े बदलाव का संकेत है। हालांकि निवेशिकाएं अब भी मुख्य रूप से शहरी इलाकों से हैं।